गीत (गायन)

विविध घराने

काशी में समय-समय पर संगीत की गायन विद्या में विविध संगीत मणीषियों, साधकों, कलाकारों के द्वारा जो प्रयत्न किए गए, यदि हम उन्हें ऐतिहासिक कालक्रम के परिपक्ष्य में मूल्यांकित कर विचार करे, तो प्रथमतः उनका विभाजन घरानों की दृष्टि से अतीव समीचीन होगा। काशी में गायन के अनेक घराने प्रमुख रूप से प्रचलन में रहते आए है और उनसे सम्बद्ध साधकों की साधना से उत्तरोत्तर विकसित होते रहे है, जिनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार हैं-

१. पियरी घराना- इस गायन घराने के प्रथम संगीत महापुरूष एवं प्रवर्तक के रूप में पं. दिलाराम मिश्र का उल्लेख मिलता है। आपका समय सोलहवीं शती के पूर्वाद्ध को माना जा सकता है। आपके पूर्वज गोण्डा-बलरामपुर के मठाधिपति एवं वैष्णव धर्म प्रचारक थे। मुगल सम्राट बाबर की विजय उन्मत सेना ने न केवल आपके पूर्वजों के मठ को ध्वस्त किया अपितु वहाँ के मठाधिपति को मौत के घाट उतार दिया। दुःखी पारिवारिक सदस्यों के साथ पं. दिलाराम मिश्र ने वहाँ से हमेशा हमेशा के लिए अन्यत्र जाने का निर्णय लिया और वृन्दावन की ओर बढ़े। वृन्दावन में आपने अपने पाँच भाईयों सहित राधावल्लभ सम्प्रदाय के विद्वान, संगीतज्ञ श्री १०८, हित हरिवंश जी से ३०-३५ वर्षों तक संगीत की उत्कृष्ट शिश्रा ग्रहण कर छन्द, प्रबन्ध, विष्णुपद, ध्रुपद, आदि शैलियों पर विशेष अधिकार प्राप्त किया और 'सेवक' उपनाम से सैकड़ों ध्रुपदों की रचना की। सभी भइयों ने संगीत के प्रचार-प्रसार का संकल्प लेकर विभिन्न दिशाओं की ओर प्रस्थान किया। पं. दिलाराम काशी के लिए चले, आपके भ्राता पं. चिन्तामणि मिश्र ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। अन्य चार भाइयों के विषय में कोई इतिहास अभी तक प्राप्त नही है। पं. दिलाराम से लेकर पं. ठाकुरदयाल मिश्र तक आपके घराने में पूर्वजों से विरासत में प्राप्त प्राचीन छन्द, प्रबन्ध, विष्णुपद, ध्रुपद आदि गायन शैली की परम्परा प्रचलित थी। प्रसिद्ध-मनोहर मिश्र सरीखे सुयोग्य वंशजों ने इस घराने को होरी, टप्पा, खयाल आदि शैलियों से भी समृद्ध कर इस पर भी अपना वर्चस्व स्थापित किया।

kvj0040.htm - varanasi

२. पं. शिवदास-प्रयागजी घराना- आप दोनों भ्राता के पिता श्री प्रहल्लाद मिश्र मूलतः बनारस-मिर्जापुर की सीमा के समीप ग्राम गुतमन खैरवगहा के निवासी थे। संगीत शिक्षा मामा रामप्रसाद मिश्र से प्रारम्भ हुई। आपके पिता कूटविहार स्टेट के सूबेदार मेजर थे, बाद में काशी आ बसे। पं. शिवदास प्रयागजी ने काशी नरेश ईश्वरी नारायण के दरबारी गायक एवं नाजिर थे। गायन की विभिन्न शैलियों के उत्कृष्ट कलाकार होने के साथ ही शिवदास जी बीन, सितार, सरोद, सुर सिंगार आदि वाद्यों के कुशल विद्वान वादक भी थे। प्रयागजी की अनुपम संगीत शिक्षा से सुपुत्र श्री मिठाई लाल मिश्र अपने युग के अनुपम गायक हुए। आप दोनों सहोदर भ्राता 'पियरी घराने' के वंशज लक्ष्मी दास गोविन्द दास-केशवदास के समकाली थे। पं. शिवदास प्रयाग जी के घराने की वंशपरम्परा एवं शिष्य-परम्परा में गायन, सारंगी, बीन आदि के अनेक उत्कृष्ट कलाकार हुए, जिन्होंने आपके घराने की मर्यादा को अत्यन्त लोकप्रिय बनाया।

kvj0040.htm - varanasi

३. श्री जगदीप मिश्र- मूलतः मौजा हरिहरपुर, जिला आजमगढ़ के निवासी थे, जो काशी आ बसे। गायन की सभी शैलियों के कुशल ज्ञाता, नृत्यकला के अगाध विद्वान्, विशेषतः बनारस अंग की ठुमरी गायकी के अनुपम, रससिद्ध गायक थे कबीर चौरा मुहल्ले में कबीरमठ के पास रहते थे। वे शिवदास-प्रयाग जी के समकालीन थे। सुदूर नेपाल से कलकत्ता तक अनेक

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

रियासतों में अपनी गायकी का झण्डा फहरा कर काशी में जीवन के अन्तिम समय तक रहकर जगदीप जी ने मौजुद्दीन खाँ को ठुमरी गायकी के अमर गायक पद पर आसीन कर अपनी अप्रतिम ठुमरी गायकी का साकार प्रतिबिम्ब प्रमाणित किया। ठुमरी गायन शैली के प्थम गायक के रूप में काशई में आपका विशेष आदर था। वस्तुतः आप स्वयं में ठुमरी के एक विशेष घराने के रूप में प्रख्यात थे, इसमें कोई संदेह नहीं।

kvj0040.htm - varanasi

४. श्री जयकरन मिश्र- मूलतः बेतिया निवासी, ध्रुपद गायकी की चारों बानियों में पूर्ण पटु, बेतिया दरबार के मूर्धन्य ध्रुपदाचार्य श्री जयकरम मिश्र, बेतिया से काशी के कबीरचौरा मुहल्ले में आ बसे और मृत्युपर्यन्त यहीं रहे। सम्भवतःआप शिवदास-प्रयाग जी से आयु में बड़े, समकालीन अगाध संगीत-विद्वान थे। आपकी परम्परा में दामाद पं. बड़े रामदास मिश्र, शिष्यों में सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायकी वेणी माधव भट्ट, भोलानाथ भट्ट आदि ने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की।

kvj0040.htm - varanasi

५. श्री धन्नूजी-सँवरूजी मिश्र- बेतिया ध्रुपद परम्परा के निष्णात विद्वान् श्री धन्नूजी सँवरू जी मूलतः बेतिया निवासी थे। कालान्तर में किन्हीं कारणों से काशी आए और कबीर चौड़ा मुहल्ले के समीप औगढ़नाथ तकिया (आघोरपंथ का सिद्धपीठ) के समीप स्थायी रूप से निवास स्थान बनाकर रहने लगे। काशी के अपने युग के अद्भुत टप्पा गायक छोटे रामदास मिश्र को ध्रुपद गायकी की शिक्षा आप ही लोगों से मिली। जीवन के अन्तिम समय तक आप लोग काशी में रहकर यहीं दिवंगत हुए। आप लोग अनुमानतः जयकरनजी आदि संगीत-विद्वानों के समकालीन थे।

kvj0040.htm - varanasi

६. श्री बख्तावर मिश्र- ध्रुपद गायन शैली के प्राचीन गढ़ के रूप में रीवाँ एवं बेतिया दोनों ही रियासते अत्यन्त प्रसिद्ध थी, क्योंकि रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह तथा बेतिया नरेश, नवल किशोर, जगत किशोर, आनन्द किशोर स्वयं ध्रुपदों की रचना में पूर्ण पटु एवं ध्रुपद गायकों के उदार पोषक, आश्रयदाता एवं सुधी नरेश के रूप में विख्यात थे। श्री बख्तावर मिश्र मूलतः बेतिया निवासी एवं राजघराने के दरबारी गायक थे। काशी नरेश- इश्वरी नारायण सिंह के विशेष आग्रह पर आप राज दरबारी गायक के रूप में काशी आए, जहाँ दरबार में जाफर खाँ, प्यार खाँ, बासत खाँ आदि कलावन्त पहले से ही प्रतिष्ठित थे। अपने समकालीन संगीतज्ञों के मध्य बख्तावर मिश्र नाद ब्रह्म उपासक, धार्मिक प्रवृति के निरभिमानी उत्कृष्ट ध्रुपद गायक के पद पर प्रतिष्ठित हुए। बेतिया घराना, रीवाँ, काशी आदि अनेक नरेशों के आदरणीय, अत्यन्त प्रिय विद्वान् बखतावर मिश्र बेतिया ध्रुपद शैली के पूर्ण पटु, सुदक्ष गायक होने के साथ-साथ जलतरंग के उत्कृष्ट वादक थे। महाराज बनारस के रामनगर दुर्ग के समीप ही रहते थे, जहाँ पर एक बगीचा और कुआँ आपके नाम के प्रसिद्ध है। राम नगर में ही आपका स्वर्गवास हुआ।

kvj0040.htm - varanasi

७. श्री दरगाही मिश्र- गायकी, नायकी, तंत्रवादन, तबली, नृत्य आदि अनक विषयों के मूर्धन्य विद्वान् श्री दरगाही मिश्र अपने समय में काशी के उत्कृष्ट विद्वानों में गिने जाते थे। मूलतः आपके पूर्वज रामगढ़-रहहिया, जिला आजमगढ़ के मूल निवासी थे। आपके पूर्वज श्री राम शरण मिश्र बनारस तबला घराना के प्रवर्तक पं. रान सहाय जी के शिष्य थे। आप राम नगर में आ बसे और कालान्तर में दरगाही मिश्र ने काशी के कबूर चौरा मुहल्ले में निवास-स्थान बनाया। आप काशी नरेश दरबार के विद्वान् कलावन्त थे, जहाँ आपके समकालीन श्री राम गोपालजी, रामसेवक जी, शिव दास प्रयाग मिश्र, बड़कू मियाँ आदि दिग्गज विद्वान् काशी राज दरबार की शोभा को द्विगुणित कर रहे थे। आपको संगीत की शिक्षा पियरी घराने के उत्कृष्ट विद्वान श्री शिवसहाय मिश्र से प्राप्त हुई और तबले की शिक्षा पिता द्वारा विरासत में मिली, श्री शिव दास प्रयाग मिश्र एवं अपने युग के काशी के विख्यात 'लयभास्कर' विद्वान् श्री ननकू लाल मिश्र आदि आदि आपके अत्यन्त नजदीकी रिश्तेदार थे, जिनके सामिप्य ने आपको बीन, सितार, सारंगी आदि की ओर उन्मुख किया और कालान्तर में

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

आप इन बाद्यों के भी मान्य विद्वान् की प्रतिष्ठा से विभूषित हुए। काशी के संगीतज्ञ-समाज में आपकी गणना 'नायक' के रूप में की जाती थी। इस घराने में समय-समय पर अनेक विषयों में 'पारंगत विद्वानों ने देशव्यापी ख्याति अर्जित कर इस घराने की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। श्री दरगही जी काशी में ही स्वर्गवासी हुए।

kvj0040.htm - varanasi

८. श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र- आपका जन्म काशी में सन् १८४८ई. के आस-पास हुआ था। आपकी संगीत-शिक्षा पियरी घराने के मूर्धन्य वंशज विद्वान् प्रसिद्ध मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र श्री शिवसहाय मिश्र जी के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई थी। गायन में टप्पा शैली के विलक्षण विद्वान् ठाकुर प्रसाद मिश्र वीणा एवं सारंगी के भी मान्य विद्वान् एवं सिद्धहस्त कलाकार थे। आपने गायन में अपने नाती पं. छोटे रामप्रसाद मिश्र हुस्नाबाई सारंगी में पं. वैजनाथप्रसाद मिश्र सरीखे शिष्यों को शिक्षा प्रदान कर सुयोग्य कलाकार के रूप में प्रतिष्ठापित किया। आपके घराने की संगीत परम्परा के सुयोग्य उत्तराधिकारी श्री छोटे रामदास मिश्र ने अपनी विलक्षण खयाल एवं टप्पा गायकी से संगीत जगत् में विशेष स्थान बनाया और अनेक शिष्यों को शिक्षा प्रदान की
जिसमें काशी नरेश के पारिवारिक राजवैद्य परिवार के सुयोग्य वंशज श्री शिवकुमार शास्त्री को गायन एवं सितार की शिक्षा प्रदान की, जिनके पास आज भी ठाकुरप्रसाद मिश्र के घराने के बन्दिशों की अमूल्य धरोहर सुरक्षित है। श्री ठाकुरप्रसाद मिश्र का देहावसान लगभग ९५ वर्ष की अवस्था में सन् १९४४-४५ई. में काशी में हुआ।

kvj0040.htm - varanasi

९. श्री मधुराजी मिश्र- आपके पूर्वज मूलतः मझौली राज, देवरिया, उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे, जो 'पयासी के मिसिर' के नाम से प्रसिद्ध थे। आपके पिता का नाम दरगाही मिश्र एवं दादा का नाम पुद्दन मिश्र एवं तमाखऊ मिश्र था। सारंगी के कुशल विद्वान् वादक श्री पुद्दनजी की असामयिक मृत्यु से पिता अत्यन्त मर्माहत हुए, जिन्हें ढ़ाढ़स बँधाते छोटे पुत्र श्री तमाखू जी ने कठिन संगीत साधना से सिद्धहस्त सारंगी वादक बनने की शपथ ली और कालान्तर में सोहना रागिनी को सिद्ध कर संगीत-जगत् में अपना अद्वितीय स्थान बनाया। ऐसे घराने की वंश-परम्परा में जन्मे श्री मधुराजी मिश्र मझौली राज दरबार के दरबारी गायक थे, कालान्तर में काशई आ गए और यहाँ विजया-नगरम् राजदरबार के दरबारी कलावन्त नियुक्त हुए। आप ध्रुपद, धमार, खयाल, टप्पा, ठुमरी सभी शैलियों के सिद्धहस्त कलाकार, धर्म-निष्ठ, कट्टर हिन्दू थे। दैनिक दिनचर्या का अधिकांश समय भगवान के पूजन, अराधना, भोग आरती में ही बीत जाता था, जबकि प्रातःकाल से ही महाराज विजयानगरम् की बग्घी दरवाजे पर आकर लग जाती थी, किन्तु सभी धार्मिक कृत्यों से विधिवत् निवृति पाकर ही दरबार जा पाते थे। महाराज के साथ बराबर का आसन प्राप्त था। आपके पुत्र श्री मनमोहन मिश्र जी कुशल गायक एवं सारंगीवादक थे, जिनकी कलकत्ते में असामयिक मृत्यु हुई। श्री मनमोहन मिश्र के एकमात्र पुत्र श्री रामप्रसाद मिश्र (रामूजी) अपने समय के अप्रतिम रससिद्ध टप्पा-ठुमरी गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिन्हे संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने दाद श्री मथुरा मिश्र से प्राप्त करने का सौभाग्य मिला, दादा की मृत्यु के बाद रामू मिश्र को अपने पिता से सारंगी की शिक्षा भी मिली। प्रथमतः आप सारंगीवादक ही थे, किन्तु किसी महफिल के कटु अनुभव से आप सारंगी छोड़कर गायन की ओर उन्मुख हुए और अत्यन्त मनमोहक लोकप्रिय गायक के रूप में रामूजी ने जो ख्याति अर्जित की, वह बिरले ही कलाकारों को मिलती है।

श्री मथुरा मिश्र कुल छः भाई थे, जिनमें सिद्ध-प्रसिद्ध, सन्तू, महन्तू आदि चार भाई मझौकी में ही बसे और दो भाई श्री मथुरा मिश्र, गोकुल मिश्र काशी आ बसे। गोकुल जी ने बनारस तबला घराना के प्रवर्तक पं. रामसहाय जी के अनुज श्री जानकी सहायजी से तबले की शिक्षा ग्रहण की और अपनी कठोर साधना से तबलावादन क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बनाया। प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य की दिशा में खड़े होकर कमर में तबले को जोड़ी बाँध कर अभ्यास करने वाले विलक्षण व्रती गोकुल मिश्र काशी के मूर्धन्य तबला-वादकों में गिने जाते थे। अज्ञानवश काशई की प्रसिद्ध गायिका पठानवाली शहजादी के हाथ से दिए हुए पान को ग्रहण कर लिया और बाद में अपने को धर्मच्युत मानकर गोकुल मियाँ के नाम से पुकारे जाने गलेघ इस प्रकार मथुरा मिश्र की वंश परम्परा में गायन, सारंगी, तबला सभी के मूर्धन्य कलाकार हुए, जिन्होंने अपने वंश की मर्यादा को समय-समय पर गौरवान्वित कर संगीत जगत् में अपना विशेष स्थान बनाया।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

kvj0040.htm - varanasi

१०. तेलियनाला घराना- सेनिया घराने के यशस्वी नायक धून्दू से जुड़ी वंश-परम्परा के सुप्रसिद्ध कलावन्त उस्ताद सादिक अली, वारिस अली (बीनकार), अकबर अली (टप्पागायक), निसार अली (ध्रुपद गायक) आदि सभी एक ही घराने के अनूठे रत्न एवं मुगल सल्तनत के शाही दरबार से जुड़े विशिष्ट संगीतज्ञ थे। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत इस्ट इण्डिया कम्पनी ने जब मुगर वंश के सम्राट बहादुर शाह जफर को पदच्युत करके कैद कर सारी सम्पत्ति हड़प ली, तो बहादुरशाह के शाही काफिले के साथ-साथ इन शाही दरबार से संबंधित संगीतज्ञों ने भी दिल्ली को अन्तिम प्रणाम कर देश की अन्य संगीत प्रेमी रियासतों की ओर प्रस्थान किया। सादिक अली का परिवार रंगुन के लिए नाव द्वारा भेजे जा रहे बहादुरशाह जफर के शाही
काफिले के साथ-साथ बनारस आया। बनारस की सरजमीन ने उन्हें ऐसा प्रभावित किया, कि यह परिवार यहीं का होकर रह गया। गुणग्राही काशी नरेश ने इन आगत विद्वानों को समुचित आदर प्रदान करते हुए अपने दरबार का कलावन्त नियुक्त किया। काशई के तेलियानाला (वर्तमान शिवाला मुहल्ला) मुहल्ले में आ बसा यह घराना अपनी उत्कृष्ट कलासाधना से इसी स्थान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घराने में उस्ताद आशइक अली खाँ तक ध्रुपद खयाल, टप्पा गायकी एवं बीन वादन की ही प्रमुखता थी, जो उस्ताद मुश्ताक अली खाँ के साथ मौलिक वंश-परम्परा की शैली की निजता के संग-संग सितारवादन की विशिष्ट निजी शैली में परिवर्तित हुई। कालान्तर में मुश्ताक अली खाँ के अन्य भाइयों-भतीजों ने सारंगी वादन क्षेत्र में अपना स्थान बनाया।

उस्ताद सादिक अली से प्राप्त बीन की शिक्षा भी मिठाई लाल ने ग्रहण की और समय आने पर आशिक अली खाँ को बीन वादन की शिक्षा प्रदान की। मुश्ताक अली खाँ के शिष्यों में निखिल बैनर्जी, देवव्रत चौधरी, राम चक्रवर्ती एवं घराने के वंशजों ने अपने-अपने क्षेत्र में विशेष प्रसिद्ध प्राप्ति की। इस प्रकार यह घराना भी अपनी निजी मौलिक शैली के लिए संगीत जगत् में अपना विशेष महत्व रखता है।

काशी के उपर्युक्त प्रमुख एवं विशिष्ट घरानों में से आज अनेक आराने लुप्तप्राय से हो चुके हैं और अनेक घराने आज भी वंशजो, शिष्यों प्रशिष्यों की अविच्छिन्न संगीत साधना से इस नगर की घरानेदार गायन परम्परा को संगीत जगत् में सौरवान्वित कर रहे हैं। इन साधकों ने अपने घराने की मौलिक विशेषताओं के साथ ने केवल घराने को विकसित किया है, अपितु प्राचीन निजता के साथ नवीन परिकल्पनाओं का उद्‌भुत समन्वय स्थापित कर अपने-अपने घरानों की वैशिष्ट्य-वृद्धि भी की है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.